Knowledgeable Research Vol 1, No 3, October 2022. ISSN 2583-6633

Knowledgeable Research **Vol-1, No-1, *October 2022***
An International Open-access Peer-reviewed Journal **Web: http://www.knowledgeableresearch.com/**

सिक्ख संरक्षण में पहाड़ी चितेरावंशीय शैलियों के सामंजस्य से सिक्ख शैली का विकास

डा0 बलबिन्द्र कुमार (शोधार्थी),
अतिथि संकाय (सहायक आचार्य) पहाड़ी चित्रकला ,
अर्न्तबिषयक अध्ययन विभाग
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला–05
Email: balbinderkangri9@gmail.com

ABSTRACT:

The Sikh style is unique due to its individual characteristics, which evolved from the Mugal style, a blend of Rajasthani, Iranian, Mughal, and European styles. It features subjects like proliferate, nihangas, Punjabi women, women's clothing, cooking, and other special subjects. The collection of these paintings is collected from the Chandigarh Museum.

KEY WORDS: Sikh Conservation, Style, Paintings, Development

पांच प्रमुख कारक हैं जो कलाकार के व्यक्तिगत इरादों के बारह है और वह निर्णायक रूप से उनकी प्रतिभा के लिए विकल्प की सीमा को प्रभावित करते रहें है। इन पर एक नज़र उसकी रचनात्मक कल्पना और उसके समय लोकल शासन के बीच संबंध को स्पष्ट कर देगा। पांच कारक है, समय–सीमा, सामाजिक और राजनीतिक प्रणाली, आंदोलनों (धार्मिक और सांस्कृतिक), सामग्री और तकनीक आदि।

फिर पहाड़ी चित्रकारों का परिवार जो नए संरक्षक की तलाश में पंजाब योजनाओं में आया था। उन्होंने वहां एक उत्कृष्ट काम किया। वे उनके साथ पहाड़ी शैली लाए, इनकी लाइन की विनम्रता, स्थापत्य विवरण, महिलाओं की सुंदरता प्रकृति की सीमाएं जो मैदानों में उपलब्ध नहीं थी। उन्होंने नए पर्यावरण, नए संरक्षक और जीवन के नए दर्शन और नए रस स्वादों को भी समायोजित किया। उन्होंने कुछ समय के लिए पहाड़ी शैली में सिक्ख विषयों का निर्माण किया गया, किताबें सचित्र थी, हिंदू शास्त्रों से पौराणिक कथाओं और सिख धर्म से जन्म साखी को दर्शाती इस शैली में

Knowledgeable Research Vol 1, No 3, October 2022. ISSN 2583-6633

दीवार चित्रो को सुशोभित किया गया था। यह बहुत महत्वपूर्ण बात है कि सिख साखियाँ पहली बार पंजाब में 18वीं और उन्नीसवीं सदी में सचित्र थीं लेकिन सिख धर्म के विकास के पिछले चार शताब्दियों के दौरान नहीं थी। इसके बाद उन्नीसवीं शताब्दी के आखिरी चरण और बीसवीं शताब्दी की शुरूआत के दौरान जल–रंग और तेल दोनों में चित्रों का एक विकास हुआ। इसलिए, यह पंजाब मैदानों में प्रमुख पहाड़ी कलाकारों की वंशावली का विश्लेशण करने के लिए उपयोगी रहा।

पहाड़ी कलाकारों की गिनती, जिनकी दो वंशावलीया थी जो निसंदेह बहुत महत्वपूर्ण थी। इस परिवार के कई सदस्य हिल्स में काम करते थे, फिर वे नए स्वामी की तलाश में पंजाब के मैदानो में चले गये एक परिवार के इन कलाकारों ने उनकी क्लासिक पहाड़ी शैली और चित्रकला की तकनीक यहां लायी है, जिसने कला मंडलियों में दुनिया भर में ख्याति अर्जित की है। ये पंजाब के विभिन्न केंद्रों में कैसे काम कर रहे थे, अब हमें विभिन्न दस्तावेजी स्त्रोतों से जाना जाता है,

कांगड़ा के पुर्खु ने अन्य कलाकारों जैसे मोहम्मद बाख्श और केरू के साथ लाहौर में काम कर रहे थे, जिन्हें डॉ.बी.एन. गोस्वामी और प्रोफेसर एस. एस. तलवार पिछले एक दशक के दौरान। पूर्व के अनुसार, नैनसुख और पुरखू परिवार के पहाड़ी चित्रकार देवीदत्ता ने 1865 ई० में महिन्दर सिन्हा के समय पटियाला में काम किया था। हरिद्वार में पंडित प्यारे लाल द्वारा बनाए गए यात्रियों के खाते (बाहियों) में प्रविष्टियों की पुष्टि है तब संग्रहालय और पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर एस.एस. तलवार को (जो पटियाला में शुरूआती 60 सालों में पर्याप्त चित्र, स्केच, ट्रेसिंग, पेंटिंग एकत्र हुए थे) ने 30 दिसंबर 1972 ई० और 1 जनवरी 1973 ई० को बताया कि कलाकर शिब्बा और शिव नारायण ने भी पटियाला में काम किया उदाहरण के लिए, कलाकारों परसराम, राम, राधा कृष्ण, नैनसुख, नौधा चित्रकारों ने चित्रों में कलाकारों का पहाड़ी और राजस्थानी आदि से पटियाला तक पहुंचने पर एक दूसरे का चित्रण भी किया था।

कुछ मामलों में कुछ कलाकार अच्छी प्रतिभा के कवियों के रूप में होते हैं। वे पेंट करते थे और एक साथ कविताओं या उनके चित्रों के विषय वस्तु का इस्तेमाल करते थे। ऐसी तस्वीरें कांगड़ा और राजस्थान में बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। सामग्री या विषय वस्तु स्थानीय और स्वामी के रसास्वादन परिवर्तन के साथ बदल गया। पहाड़ी राजा संसारचंद और गुलेर तथा बसोहली के राजकुमार कलाकारों के प्रमुख नायक थे लेकिन पंजाब के मैदानों में, इस मामले में परिवर्तन हुआ था। संसारचंद के दरबार के दृश्य को रणजीत सिंह के दरबार में बदल दिया गया, पहाड़ी चित्रों की पर्यावरण बदलकर लाहौर शहर और अमृतसर में बदल दिया गया।

पहाड़ी प्रमुखों की जगह सिख व्यक्तियों को स्थानांतरित किया गया, रंजीत सिंह के दरबार में बैठे सिख प्रतिष्ठित या शेर सिंह, दलीप सिंह और उनके दरबारियों के साथ सिख गुरुओं के सेट बड़ी संख्या में तैयार किए गए थे मंदिरों और गुरुद्वारों के दस गुरुओं, हवेली और समधाओं के जीवन चक्रों के साथ चित्रित किया गया था, जिन्हें सिख धार्मिक और हिंद आध्यात्मिक रूपों के साथ चित्रित किया गया था। इस प्रकार पेंटिंग की पूरी शैली पंजाब में बदल गई प्रतीकों, सम्मेलनों और पेंटिंग के अन्य अवयवों ने पिछली शैली से विशेष प्रस्थान की शुरुआत की, जहां से इसकी उत्पत्ति हुई। नए प्रतीक नए रूझान, नए विचार और नए पर्यावरण ने पेंटिंग की शैली को फिर से जन्म दिया, जिसे सिख स्कूल के रूप में जाना जाता है। इन्हीं कलाकारों ने निजी तौर पर पटियाला के शासकों के शबीह बनाये। यह कलाकार केवल लघु चित्रकला में ही विशेषज्ञ नही थे बल्कि साथ में फ्रेस्कों तकनीक में महारथ थी यह भवन निर्माता के साथ–साथ कुशल नक्काश भी थे खिड़कियों में साजसज्जा में विशेष थे यह चित्रकार बहुत रोचक आनन्दित भावना से कार्य करते थे जब वे विश्राम करते थे तो एक दूसरे के शवीह बनाया करते थे रेखाकंन करते थे व लेखन भी रहता था कलाकारों की वंशावलियों से सम्बन्धित प्रमाण इनकी वंशावली एक सदस्य रामजी दास नजदीक बखसी बीर सिंह स्कूल के पास शिव मण्डी पटियाला के नजदीक से प्राप्त हुई जो उसी ने ही बनायी थी से रिकार्ड उपलब्ध हुआ था।

Knowledgeable Research Vol 1, No 3, October 2022. ISSN 2583-6633

सिक्ख

यदि ऐतिहासिक ध्यान न दिया जाये पंजाब के राजाओं के राजनैतिक भूमिका पर कि भारतीय इतिहास में उन पर अत्यधिक आलोचनात्मक अवस्था बनी रही थी कोई भी उनके क्षेत्रीय ब्लॉक में कला, इतिहास, संस्कृति में होने वाले योगदान को नहीं भूल सकता जिसमें उनके राज्याश्रय में सतलुज क्षेत्रीय भूखण्ड में परम्परागत मूल्यों की कला, वास्तुकला, संगीत का विकास, संरक्षण, हुआ था। जिसमें प्रतिभाशाली संगीतज्ञ उभरे उच्चकोटि के कलाकारों का संरक्षण, कवियों व लेखकों को उच्च स्तरीय सम्मानों द्वारा फुलकीयां सरदारों के दरबारों में कलाकारों को सम्मानित किया जाता था।

यह शासन सौन्दर्य के प्रति रसिक थे धार्मिक सहनशीलता तथा उदार स्वभाव विश्वबन्धुत्व से प्रशिक्षित शासक थे इनके शासन व्यवस्था में पटियाला, कपूरथला, जीन्द, नाभा, फरीदकोट, कल्सीयां, नालागढ़ , मेलेर कोटला आदि जो मुख्यतः फुल्कीयां और सिख–सतलुज राज्य का रूप धारण कर चुका था व इनके शासन नियन्त्रण मे पूर्ण राज्य अधिकारों का आनन्द तथा 200 वर्षों तक सुख समृद्धि में रहें।

पटियाला

इसमें सबसे प्राचीन व ताकतवर राज्य था जिसके मुख्य शासक फूल वंश या उनके महान व बड़े पूर्वज चौधरी फूल भट्टी राजपूत थे। जिनका मूल सम्बन्ध जेसलमेर राजस्थान से था। इस केन्द्र में कलाकारों संगीतज्ञों एवं शोधकर्ताओं के प्रतिष्ठित समूह दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा से होते थे। कवि कवितायें संयोजित करते, संगीतकार शास्त्रीय गीत गाकर कई नये रागों को हिन्दुस्तानी संगीत में गाये। पटियाला के संस्थापक पिता बाबा अलाह सिंह एक महान सैनिक था जिसने 18 वीं सदी में जेसलमेर राजस्थान से स्थानान्तरण करके इस राज्य का निर्माण किया वह मुगलों में अच्छे सम्पर्क में था उसने विभिन्न सैनिक विस्तार (दुर्रानी व अब्दाली के विरूद्ध) कार्यवाही की जिसके फलस्वरूप उसको मुगलों ने यहां की जागीर दी तथा महाराजा की उपाधि से सम्मानित भी किया था। यहां कला, वास्तुकला, संगीत, पहनावा, परिवेश सभी प्रकार की कला का उदगम्य पटियाला के फुलकीयाँ क्षेत्र में शास्त्रीय कला पुर्नजागरण के रूप में उभरा। यहां के शाासक नरेन्द्र सिंह (1845–62 ई०) और उसके पुत्र महेन्द्र सिंह (1862–76 ई०) के अधिपत्य में दोनो ही महान स्वतन्त्र कला संरक्षक एक पोषक रहे। नरेन्द्र सिंह ने लाहौर शालीमार नमूने पर आधारित शीश महल मोती बाग महल सन् 1847 ई० में यहां बनवाया मूल्य 5 लाख रूप्ये की दर से जिसमें विश्वप्रसिद्ध फ्रेस्को के साथ पहाड़ी लघु चित्र शैलीवद्ध गुलेर तथा काँगड़ा शैली में बने यहां यह चित्रकला व लेखन अपने चरमोत्कर्ष पर थे अभी वर्तमान पंजाब सरकार संग्रहालय व पुरातत्ववेता विभाग ने कुछ 5 हजार चित्रों को प्राप्त किया रेखांकन तथा चित्र खाके–सांचे जो कलाकारों के वंशानुगत थे उनके एक वंशज कलाकार रामजी दास पटियाला दरबारी कलाकारों के वंश के है से प्राप्त हुये। यह वंशानुगत कलाकार पटियाला, नाभा, संगरूर में कार्य करते थे।

नाभा

पटियाला नगर से 16 मील की दूरी पर नाभा राजसी राजदरबारी घर स्थित है यहाँ का शासक जसवन्त सिंह (1783–1840 ई०) और उसका पुत्र देवेन्द्र सिंह ब्राह्मण पुजारी के प्रेरणारत थ। पुजारी विशनदास ब्राह्मण के साथ यह शासक वैरागियों को संरक्षण प्रदान करते। देवेन्द्र सिंह के पुत्र बहादुर सिंह अपने में एक अच्छा कलाकार था तथा उसने मानवीय शारीरिक संरचना का चित्रांकन, वास्तुकला के कार्य पूर्ण किये, जिसमें विश्राम गृह, एक कोठी पक्का वाग, रानियों के लिये महल, शीश महल की भान्ति यहां रानी महल में भी साज्जसज्ज़ा फ्रेस्कों का कार्य बिल्कुल पटियाला की भान्ति है यहां कलाकरों, चित्रकारों के स्थानान्तरण की सम्भावनायें रही है पटियाला से नाभा तथा

Knowledgeable Research Vol 1, No 3, October 2022. ISSN 2583-6633

आगे यह भी चित्रण में पाया गया कि जो कलाकार कुछ समय के लिये बसोहली, चम्बा और गुलेर में काम करते थे उन्होंने बाद में लाहौर में भी काम किया उसके बाद पटियाला तथा संगरूर में भी तथा नाभा में भी चित्रण किया। कलाकारों चित्रकारों की अलग–अलग केन्द्रों में आवागमन से निर्मित व चित्रित रचनायें जो कला इतिहास को जोड़ सकती है।

कपूरथला

कला व वास्तुकला के क्षेत्र में कपूरथला में प्रधान कृतियां बनाई गई यहां का महल पांच मिलियन रू० की लागत से बनाया गया था फ्रेन्च वास्तुकलाकार ने इसे रेनासिंस शैली में बनाया तथा यहां सतलुज के अहलुवालिया मिसल से सम्बन्धित शासकों के संरक्षण में चित्रकला एवं सचित्र पाण्डुलिपियों, पोथियों का चित्रण लगातार करवाया गया। फतेह सिंह द्वारा कलात्मक दर्जे का शालीमार बाग का निर्माण करवाया गया। तथा नगर से बाहर दरबारी हॉल बिल्कुल लाहौर के मुख्य दरबार के समानान्तर पांच लाख रूपये से जगजीत सिंह द्वारा बनवाया गया तथा कॉलेज, कोठी, पुस्तकालय, बाग आदि भी बनवाया गया जो पूर्णतया कलात्मक था।

जिन्द

इस राज्य का शासन यहां के योग्य शिक्षित शासक रघुवीर सिंह 11 नवम्बर 1833 से 7 मार्च 1887 ई० तक रहा था उसने पिता सरुप सिंह की मृत्यु 26 जनवरी 1864 ई० के बाद उसने अपने शासन विस्तार हेतु 31 मार्च 1864 ई० को संगरूर को अपनी राजधानी बनाया। कला, साहित्य, के विकास मे हिन्दी, पंजाबी में रचनायें रही है, कई सुन्दर इमारतें बनी यहां का बाजार जयपुर की तरह ही एक दीवान खाना, जिन्द में भूतेश्वर से जाना जाने वाला शिव मंदिर जो स्वर्ण मन्दिर में एक रूप ही है।

सिक्ख लघु चित्रकला का अन्तिम चरण

पंजाब में भित्ति चित्रकला (म्यूरल पेंटिग) के साथ–साथ लघु चित्रकला का भी विकास हुआ चित्रकारों द्वारा छोटे–बड़े हर शासक का शबीह बना उनके उत्तराधिकारी अपने पूर्वजों के इस यादगार पर गर्व करते है परन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि बहुत की सूक्षत्म का उत्तम स्तर की लघु चित्रों की संख्या दिल्ली में दुकानों में बेची गई व विदेशी को चली गई।

पंजाब लघ ुचित्रकला के प्रधान केन्द्र विशेषतया लाहौर, अमृतसर, पटियाला, कपूरथला, जीन्द, नाभा आदि थे इन क्षेत्रों के शासकों ने 19वीं सदी में इस कला को संरक्षण दिया जब मुगल शासकों के राजदरबारी सरंक्षण के कारखानों में हेराती व सिराजी बुद्धिजीवी प्रतिभावान चित्रकार कार्यरत थे यहां प्रभावपूर्ण व प्रेरणाप्रद यह भी रहा कि लाहौर एक प्रसिद्ध सांस्कृतिक केन्द्र गजनी व मुगलों के समय में रहा उनके अपने कलाकार–चित्रकार नक्काश, लिपिकार, वास्तुकार, कारीगर, मिस्त्री उच्च कोटि के थे।

इसके अतिरिक्त शासक कलाकारों को अपने शबीह बनवाने तथा महलों की साजसज्जा हेतु लाया करते थे तथा दरबार हेतु भेट स्वरूप के लिये कलाकारों से चित्र बनवाते थे। इसके अन्तर्गत किलों, महलों, प्रदर्शनी स्थलों तथा हवेलियो ंका निर्माण भी रहता। दिल्ली तथा पश्चिमी हिमालय के चित्रकार पंजाब के मैदानी क्षेत्र के नये संरक्षण में आये, राजस्थान व अवध के कलाकारों को भी यहां संरक्षण मिला वास्तव में यह कलाकार अपनी प्रतिभापूर्ण विशेष प्रसिद्ध शैलियों को अपने साथ लाये जो राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विश्व कला में विशेष प्रसिद्ध थी। दिल्ली से दुर्भाग्यपूर्ण उपेक्षित चित्रकार जो भारत के विभिन्न हिस्सों के थे पंजाब में आये तथा पश्चिमी हिमालय पंजाब में भी गये।

डॉ० आनन्द कुमार स्वामी, पर्सी ब्राऊन, और एस.एन.दासगुप्ता ने पहली बार इन लघु चित्रकला शैली को अमृतसर व लाहौर के बाजार में 20 वीं सदी के द्वितीय पूर्वार्ध में देखा था। तब डा० मुल्क राज आनन्द, डा० डब्ल्यू जी. आर्चर डा० एम० एस० रंधावा, डा० बी एन गोस्वामी, ने

Knowledgeable Research Vol 1, No 3, October 2022. ISSN 2583-6633

आगे चलकर इस पर प्रकाश डाला लगभग 20 वीं सदी के तृतीय भाग में। यद्यपि इन लेखकों की प्रस्तुतीया खोजें लघु चित्रकला के विकास एवं वृद्धि से सम्बन्धित इस समय रही थी उनकी यह खोजे निश्चय ही निरीक्षण रहित रही थी जिसमें पंजाब के कला उपकेन्द्रों में विशेषकर फुल्कीयां में चित्रकला कार्य खोजकर्ताओं के विचार–विमर्श से अछूता रह गया था।

पंजाब में विकसित होने वाली लघु चित्रकला शैली न तो पूर्ण रूप से पहाड़ी शैली सी थी न हो मुगल जैसी जो कि मुगल दरबार दिल्ली से यहां आयी हो यद्यपि प्रयुक्त रंग व अलंकरण में पूर्वज कलाकारों के परम्परागत रेखांकन पीढ़ीदर कला दृष्टिकोण से अपनाये जाते रहे है जिनका आन्तरिक प्रेरणात्मक स्त्रोत हिमाचल प्रदेश रहा था तथापि जब रणजीत सिंह ने संसार चन्द को हराया था तब 1808 में काँगड़ा के अधिकतर कलाकार उसके सिक्ख सरंक्षण में साधारणतया देखे गये फकीर सेंयद वहिद–उ–दीन जो फकीर अजीज–उद–दीन का पड़पौता कलाकार था। रणजीत सिंह के मन्त्री ने लिखा है कि महाराजा सभी को ललित कला में समान दर्जा देता था उनके यहां दरबार में कलाकार केहर सिंह, मोहम्मद बख्श, तथा काँगड़ा के पुरखू काम करते थे।

इनके दरबार में विदेशियों की नियुक्तियां भी थी आधुनिक दृष्टिकोण से सैनिक टुकड़ियों को आगे बढ़ाने हेतु तथा रणजीत सिंह के शबीह के साथ–साथ तथा लाहौर व अमृतसर और अन्य स्थानों में रहकर कला कार्य करते थे। विशेष तौर पर सिक्ख गुरूओं के व्यक्ति चित्र भी बनाये गये जिसमें धार्मिक चरमोत्कर्ष तथा रीतिरिवाज परम्परागत वेश में शारीरिक रचना अद्भुत है यह शैलीबद्ध प्रभाव सिक्खों का कांगड़ा पर अधिपत्य के दौरान हुआ इस समय तक पहाड़ी शैली का प्रभाव चारों ओर फैल गया था तथा इस बुद्ध कला परम्परा का प्रभाव लाहौर, अमृतसर, पटियाला में बना रहा।

सिक्ख शैली भी अपनी निजी विशेषताओं के कारण अन्य शैलियों से भिन्न है। क्योंकि जब मुगल शैली का विकास हुआ तो यह विभिन्न शैलियों राजस्थानी, ईरानी, मंगोलियन तथा यूरोपियन शैलियों के समिश्रण से संयोजित एक रूप मुगल शैली कहलाया जो यही भारत में विकसित हुआ।

सिक्ख परम्परागत शैली की विषय–वस्तु की प्रचुरता में निहंगो के व्यक्ति चित्र पंजाबी महिलाओं, जंगली, पंजाबी महिलाओं द्वारा खाना पकाना, ज्ञानी गुरूमुख का शबीह, मोरन सरकार का शबीह, दरवारी राजकुमारों, शेरसिंह, खड़क सिंह, रानियों अन्य विशेष व सामान्य विषयों पर चित्र बनाये गये इन चित्रों का संग्रह चण्डीगढ़ संग्रहालय से संग्रहित है।

सन्दर्भ सूचीः–

1 अजीजुदीन एफ० एस०– पहाड़ी पेटिगंस एण्ड सिक्ख पोरट्रेटस इन दी लाहौर म्यूजियम, लन्दन–1977 ।
2 आर्चर, डब्लयू.जी.– इंडियन पेंटिग इन पंजाब हिल्स लंदन, 1952।
3 गोस्वामी बी०एन/ केरान स्मिथ– अर्ली सिक्ख आर्ट एण्ड डिवोशन।
4 हटचिसन और बोगल, जे.पी.एच.– हिस्ट्री ऑफ दी पंजाब हिल स्टेट, नई दिल्ली।
5 रिज्जाजुद्दीन अखतर–हिस्ट्री ऑफ हेण्डीक्राफ्टस (पाकिस्तान–इण्डिया)।
6 सिक्ख मिसनरी कालेज, ब्रीफ हिस्ट्री आफ सिक्ख मिसलस ।
7 श्रीवास्तव आर०पी०–पंजाब पेटिंग ।
8 गोस्वामी बी०एन/ केरान स्मिथ– अर्ली सिक्ख आर्ट एण्ड डिवोशन, मापीन पब्लिशर्ज– 2006